लंदन प्लेग डायरी

1665

डैनियल डीफो

अनुवाद: बिभाष कुमार श्रीवास्तव

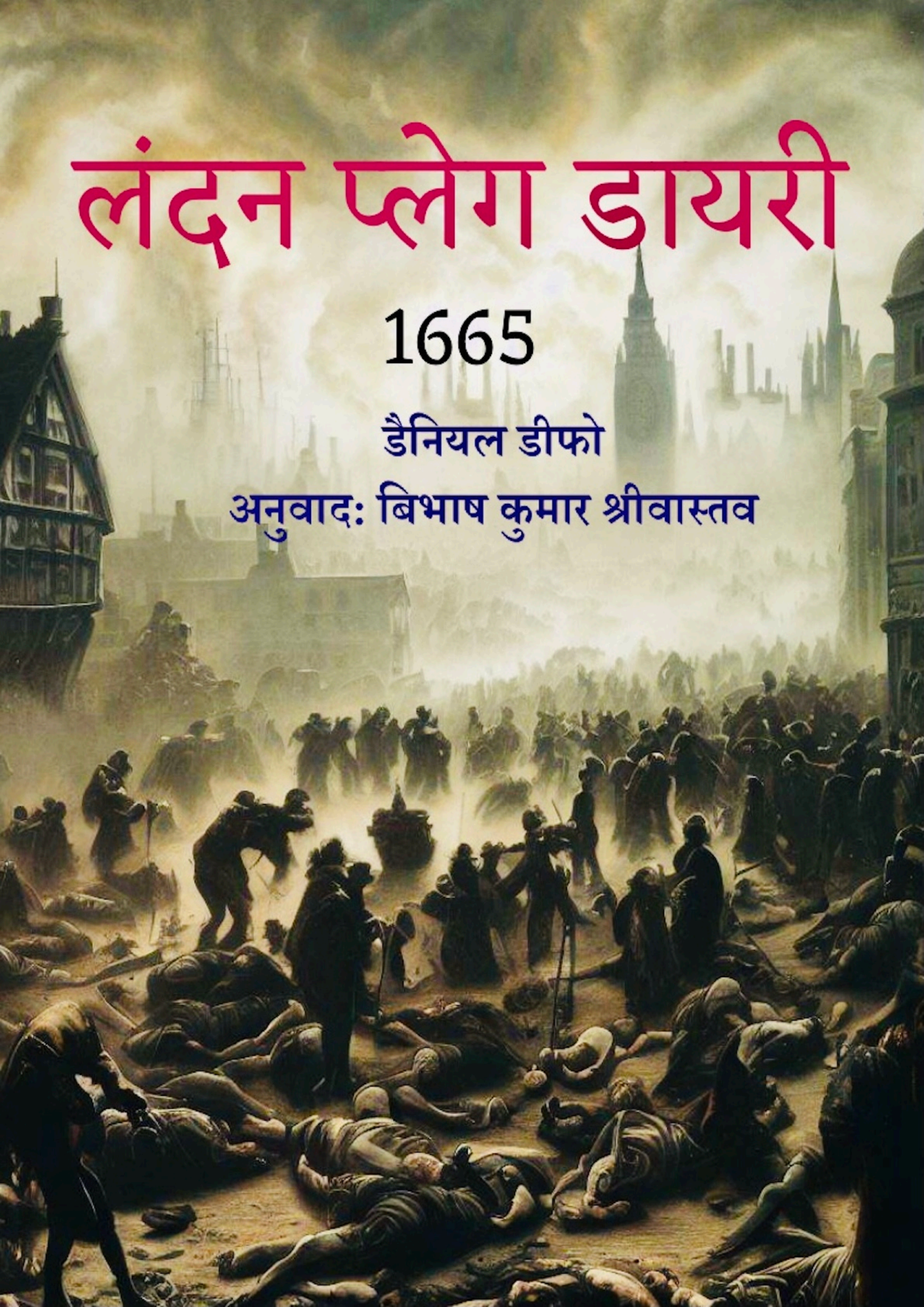

लंदन प्लेग डायरी

1665

डैनियल डीफो

अनुवाद:

बिभाष कुमार श्रीवास्तव

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अगस्त, 2023

© बिभाष कुमार श्रीवास्तव

भूमिका

A Journal of the Plague Year जिसे Daniel Defoe ने दर्ज किया है। यह एक किताब है जिसका यह हिंदी अनुवाद आप के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। सन् 1722 में E. Nutt at the Royal Exchange; J. Roberts in Warick Lane; A. Dodd without Temple-Bar और James Graves in James's Street के लिए प्रकाशित किताब के कवर पेज का शीर्षक इस प्रकार है: 'A Joural Of The Plague: Being Observations or Memorials, a Of the moft Remarkable Occurrences, As well Publick as Private Which happenned in London During the laft Great Visitation in 1665'. यह पुस्तक Gutenberg eBook द्वारा दिसम्बर 1995 में ई-बुक के रूप में प्रकाशित हुआ था। क़रीब ढ़ाई साल पहले, मार्च 2021 में जब मुझे कोरोना हुआ तो यह किताब मेरी नज़र में आई। इस किताब को मैं पढ़ गया और लगा कि यह तो कोरोन का ही जरनल है। सन् 1665 के लंदन के प्लेग और हाल में फैले कोरोना महामारी में कितना साम्य है, मैं इसे पढ़ कर चमत्कृत हो गया। कैसे बीमारी लंदन के एक ओर उजागर हुई, और बाक़ी लोग मस्त थे यह सोच कर कि यह बीमारी उन तक नहीं पहुँचेगी। लोग लापरवाह बने हुए थे। लेकिन बीमारी धीरे-धीरे करके शहर के इलाक़ों को लीलती रही। जब बीमारी तेज़ी से अपने चरम पर पहुँच गई तो सब के सब किंकर्तव्यविमूढ़ पकड़े गए। लोगों को, चिकित्सकों को समझ में नहीं आया कि क्या करें। प्रशासन किसी भी तरह से इस आपदा को सम्हालने के लिए तैयार नहीं था।

शुरुआत में नीमहकीमी और अफ़वाहों का बाज़ार गर्म था। लोग अपना धन लुटा कर नीम हकीमों से नुस्ख़े ख़रीद रहे थे। आज के ह्वॉट्सएप की तरह रोज़ाना नई नई किताबें छप रही थीं। बाद में जब प्लेग ताण्डव मचाने सगा तो लोग बदहवास हो कर लंदन से हर ओर भाग निकल रहे थे गाँवों की ओर। जो शासनादेश उस ज़माने में जारी हुआ था उसकी तुलना कोरोना के दौरान जारी शासनादेशों से किया जा सकता है। संक्षेप में कहें तो 1665 से 2021 के बीच में कुछ नहीं बदला।

यह मेरा पहला अंग्रेज़ी से हिंदी अनुवाद का प्रयत्न है। बड़ी दिक़्क़तों का सामना करना पड़ा। चार सौ साल पहले की अंग्रेज़ी और उस समय के शब्दों और वाक्यांशों को समझना एक टेढ़ी खीर थी। कई शब्द न तो डिक्शनरी में थे और न ही गूगल पर। पूरा जरनल रोचक होते हुए भी कई जगह विवरणों का दोहराव है। फिर भी यह एक दस्तावेज़ है जिसे पढ़ा जाना चाहिए। अनुवाद में किसी भी त्रुटि के लिए क्षमा करेंगे और इस प्रयास को स्वीकार करेंगे।

बिभाष कुमार श्रीवास्तव

लखनऊ

अगस्त 2023

अनुक्रम

प्लेग का पदार्पण	7
भयातुर लोगों में मची भगदड़	16
प्लेग का प्रसार	27
घरबंदी	32
गप्प और अंधविश्वास का राज	35
प्लेग में धर्माचार	45
प्लेग में धोखाधड़ी का बोलबाला	47
नीम हकीमों की पौ-बारह	52
काफ़ूर होता नशा	58
प्लेग संबंधी सरकारी आदेश	63
हर हल्क़े में परीक्षकों को नियुक्त किया जाना	66
संक्रमित घरों और प्लेग से बीमार व्यक्तियों के सम्बन्ध में आदेश	70
सड़कों पर झाड़ू लगाने और साफ़-सफ़ाई करने सम्बंधी आदेश	76
आवारा व्यक्तियों और बिला मतलब लोगों के इकट्ठे होने के संबंध में आदेश	78
दफ़नाना भी दयनीय हो चला था	97

लोगों की बेहयाई 104

प्लेग की कहानियाँ 111

प्लेग में दान-धर्म 140

ठप्प घरेलू व्यापार 143

लॉर्ड मेयर की व्यवस्था 147

आँकड़ों में प्लेग 150

प्लेग की भयावहता 152

प्लेग में मानसिक विचलन 156

प्लेग में औरतें और बच्चों की बदहाली 173

नदी, गाँव और शहर 222

घरबंदी और शिकायतों का प्रबंध 226

जाँचकर्ता के रूप में मेरी तैनाती 231

और भी हैं कहानियाँ 233

धर्म एक सहारा 250

प्लेग का पहाड़ और इंतज़ाम 253

प्लेग आगे चलता गया पीछे लुप्त होता गया 265

प्लेग में व्यापार 294

प्लेग की ढलान 309

पहली मिलती हुई ख़ुशी 311

क़ब्रिस्तानों का खुर्द-बुर्द किया जाना 319

दीगर बातें 323

उपसंहार 337

प्लेग का पदार्पण

यह सितंबर, 1664 के शुरुआती दिनों की बात है जब मैंने अपने पड़ोसियों की बात-चीत में सुना कि प्लेग हॉलैंड में फिर से लौटा आया है; कि वह वहाँ बहुत ही प्रचण्ड था विशेष रूप से एम्स्टर्डम और रॉटरडैम में, वर्ष 1663 में। कुछ का कहना था यह इटली से आया, कुछ के अनुसार यह लेवंत (Levant) से तुर्की बेड़ों द्वारा साथ लाए सामानों के साथ आया, कुछ अन्य के अनुसार यह कैंडिया (Candia) से आया था, तो कुछ ने कहा यह साइप्रस से आया। ख़ैर, बात यह नहीं है कि यह आया कहाँ से था; बल्कि बात यह है कि यह हॉलैंड में फिर से आ गया था।

उन दिनों अख़बार तो थे नहीं जिससे कि अफवाह फैले या फिर इन खबरों की तथ्यात्मक रिपोर्टिंग हो सके और इंसानी खोजबीन से उनमें सुधार किया जा सके। हालाँकि यह सब भी मैंने अपने जीवन में देखा है। तब यह जानकारी व्यापारियों या उन लोगों द्वारा मिलती थी जो देश-विदेश के व्यापारियों से पत्राचार करते थे, या फिर उनके बीच ज़बानी संदेशों द्वारा। इस कारण सूचनाएँ फ़ौरन पूरे देश में नहीं फैल पाती थीं, जैसा कि अब होता है। लेकिन ऐसा लगता था कि सरकार के पास इसके बारे में पुख़्ता जानकारी थी और इसके आने से रोकने के तरीकों के बारे में कई मीटिंगें भी की गईं; लेकिन यह सब बहुत ही गोपनीय रखा गया था। जिसका नतीजा यह हुआ कि यह अफ़वाह फिर थम गई, लोग इसे बेमतलब की बात समझकर भूलने लगे और हम आशा में थे कि ख़बर सही नहीं थी लेकिन तब तक ही जब तक कि नवम्बर के आख़िर में या

दिसम्बर 1664 दो आदमी जिन्हें फ़्रांसीसी बताया गया लॉन्ग एकर (Long Acre) या ड्रुरी (Drury Lane) लेन के ऊपरी छोर में प्लेग से मर नहीं गए। उनके परिवारजन जितना संभव हो सके इसे छुपाने के प्रयास में थे, लेकिन जैसे-तैसे पड़ोसियों को इसकी भनक लग गई, और फिर राज्य सचिवों को मालूम हो गया। इसके बारे में पूछताछ करने व सच जानने के लिए उन्होंने दो चिकित्सकों और एक सर्जन को उनके घर पर जाने और निरीक्षण करने का आदेश दिया। चिकित्सकों और सर्जन ने निरीक्षण किया। उन्होंने दोनों शवों पर बीमारी के स्पष्ट लक्षण पाए जाने पर, सार्वजनिक रूप से उनके प्लेग में मारे जाने की पुष्टि की। इस जानकारी को हल्क़े के क्लर्क को दिया गया और उसने उसे राज-सरकार को भेज दी; और यह सूचना सामान्य परम्परा के अनुसार मृत्यु के साप्ताहिक बिल में प्रकाशित की गई जो इस प्रकार थी-

प्लेग: मृत्यु 2, संक्रमित: 1

लोगों ने इस पर बड़ी चिंता ज़ाहिर की और पूरा शहर सतर्क हो गया, इस कारण भी कि दिसंबर 1664 के आख़िरी सप्ताह में उसी घर में एक और आदमी की मौत उसी रोग से हो गई। इसके बाद लगभग छह सप्ताह तक हम राहत में थे, जब किसी की मौत संक्रमण के कारण नहीं हुई। यह कहा जाने लगा कि बीमारी चली गई। लेकिन इसके बाद, मेरे ख़याल से 12 फरवरी को, किसी दूसरे घर में एक और आदमी मर गया, बिलकुल उसी हल्क़े में और उसी तरीक़े से।

इसके बाद तो लोगों की निगाहें शहर के उसी आख़िरी छोर पर गड़ गईं, और सेंट गाइल्स (St Giles) हल्क़े में दफ़्न के सामान्य से अधिक बढ़ोत्तरी के समाचार साप्ताहिक बिलों (मरने वालों की सूची कह सकते हैं) में आने लगे थे, यह संदेह होने लगा था कि शहर के उस छोर पर लोगों में प्लेग फैला हुआ है, और इससे कई लोगों की मृत्यु हो गई है, हालाँकि सरकार ने इस जानकारी को जनता से दूर रखने का हर संभव प्रयास किया। लोगों के दिमाग़ में यह बात घर कर गई और वही कुछ लोग ड्रूरी लेन या दूसरे संदिग्ध सड़कों पर जाते थे जिनके पास कोई बहुत ज़रूरी काम हो।

बिलों में संख्या में बढ़ोत्तरी कुछ इस प्रकार थी: सेंट गाईल्स-इन-दी-फ़ील्ड्स (St Giles-in-the-Fields) और सेंट एंड्रयू'ज़ (St Andrew's), होलबॉर्न (Holborn) हल्क़ों में से प्रत्येक में दफ़नाने की सामान्य संख्या बारह से सत्रह या उन्नीस थी, कुछ ज़्यादा या कम; लेकिन जब से सेंट गाईल्स में पहली पहली बार प्लेग शुरू हुआ, ऐसा देखा गया कि सामान्य रूप से दफ़नाए जाने की सामान्य संख्या बहुत बढ़ गई। उदाहरण के लिए:-

27 दिसंबर से 3 जनवरी तक	सेंट गाईल्स में 16	सेंट में एंड्रयू'ज़ 17
3 जनवरी से 10 जनवरी तक	सेंट गाईल्स में 12	सेंट एंड्रयू'ज़ में 25
10 जनवरी से 17 जनवरी तक	सेंट गाईल्स में 18	सेंट एंड्रयू'ज़ में 28
17 जनवरी से 24 तक	सेंट गाईल्स में 23	सेंट एंड्रयू'ज़ में 16
24 जनवरी से 31 तक	सेंट गाईल्स में 24	सेंट एंड्रयू'ज़ में 15
30 जनवरी से 7 फ़रवरी तक	सेंट गाईल्स में 21	सेंट एंड्रयू'ज़ में 23
7 फ़रवरी से 14 फ़रवरी	सेंट गाईल्स में 24	